Ho – कोई भी भविष्यवक्ता यरूशलेम के बाहर नहीं मर सकता लूका
१३:३१-३५ | 1

– Save This Page as a PDF–

कोई भी भविष्यवक्ता यरूशलेम के बाहर नहीं मर सकता लूका १३:३१-३५

खुदाई: येशुआ यहां श्लोक ३२-३३ में अपने इरादों के बारे में क्या प्रकट करता है? हेरोदेस एंटिपास एक वास्तविक ख़तरा क्यों था? मसीह की प्रतिक्रिया उसके बारे में क्या दर्शाती है? यीशु की मृत्यु कहाँ और कब होगी इसका नियंत्रण किसने किया? इस बिंदु पर यरूशलेम का भाग्य पहले से ही क्यों निर्धारित किया गया था? येशुआ की भविष्यवाणी के बारे में आपको क्या आश्चर्य हुआ? इसकी पूर्ति कब हुई? मसीहा किन परिस्थितियों में वापस आएगा? कब?

चिंतन: अपने राष्ट्र की आध्यात्मिक स्थिति के बारे में आपको क्या चिंता है? आपका सिटि? आपका कलीसिया? आपका मसीहाई आराधनालय? प्रत्येक के लिए उसके पंखों के नीचे एकत्रित होने का क्या अर्थ होगा? जब आप आश्वस्त होते हैं कि एडोनाई का आपके जीवन के लिए एक उद्देश्य है तो आप विरोध पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि जिसे आप पूरे दिल से प्यार करते थे, उसने आपको अस्वीकार कर दिया हो? आप क्या कल्पना करते हैं कि आपके वहाँ खड़े होने पर उसकी वापसी कैसी होगी?

उसी समय जब यीशु संकरे द्वार से प्रवेश करने की बात कर रहा था, कुछ फरीसी उसके पास आए और कहा, “इस जगह को छोड़ दो और कहीं और चले जाओ” (लूका १३:३१)। कुछ व्याख्याकारों का मानना है कि फरीसी येशुआ को वापस यहूदिया में डराने की कोशिश कर रहे थे ताकि महान महासभा (देखें Lg – महान महासभा) का उस पर नियंत्रण हो जाए। बेथेल में सोने के बछड़े के जाजक अमज़िया के प्रयास की तुलना करें, जिसने भविष्यवक्ता आमोस को इस्राएल से यहूदिया में डराने के लिए किया था। वह भी असफल रहा (आमोस ७:१०-१७)। लेकिन इस तरह की कुटिल प्रेरणा इस उदाहरण में मौजूद नहीं होनी चाहिए, क्योंकि सभी फरीसी मसीहा को मारना नहीं चाहते थे; हो सकता है कि इन्होंने प्रभु को चेतावनी देने के लिए पर्याप्त सोचा हो। वास्तव में, कुछ परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं थे (मरकुस १२:३४) और कुछ उस पर विश्वास करने लगे और फरीसी बने रहे (प्रेरितों १५:५), उनमें टार्सस का शाऊल (प्रेरितों २१:१३) भी शामिल था।

“हेरोदेस तुम्हें मार डालना चाहता है” (लूका १३:३१)। यीशु माचेरस से बहुत दूर नहीं था, वही स्थान जहाँ उसने बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवाया था। हेरोदेस महान का पुत्र (देखें Av – ज्योतिषी का दौरा), हेरोदेस एंटिपास गैलील और पेरिया

Ho – कोई भी भविष्यवक्ता यरूशलेम के बाहर नहीं मर सकता लूका
१३:३१-३५ | 2

का पहली शताब्दी का शासक था जिसने टेट्रार्क या एक चौथाई के शासक की उपाधि धारण की थी। उसकी धमकी वास्तविक थी। यद्यपि हेरोदेस मसीहा को चमत्कार करते हुए देखना चाहता था (देखें Lp – जब हेरोदेस ने यीशु को देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ), उसने प्रभु को बप्तिजक योचानन जैसा एक खतरनाक नेता माना, जिसे उसने मार डाला था (देखें एफएल – युहन्ना बप्तिस्मा देने बाला का सिर काट दिया गया)। मसीह का उत्तर, रब्बी शाऊल की अगाव की तरह (प्रेरितों २१:१३), यह है कि धमकियाँ उसे परमेश्वर की योजना का पालन करने से हतोत्साहित नहीं करेंगी।



प्रभु ने उत्तर दिया: जाओ उस लोमड़ी से कहो, “मैं
आज (संक्षिप्त लेकिन निश्चित अवधि के लिए) अपने रास्ते पर जा रहा हूं और कल मैं दुष्टआत्मा को निकाल रहा हूं और लोगों को ठीक कर रहा हूं, और तीसरे दिन मैं अपने लक्ष्य तक पहुंच जाऊंगा” (लूका १३:३२ सीजेबी)। हेराल्ड के साथ व्यवहार करने में हेरोदेस चतुर, धोखेबाज, चालाक और क्रूर था, उसने गुप्त रूप से युहन्ना का सिर काटकर उसे ठिकाने लगा दिया और झूठे आधारों पर अपने कृत्य का बचाव किया। एंटिपास येशुआ को भी इसी तरह निपटा देना चाहता था। लेकिन हेरोदेस की धमकियों के कारण पाखण्डी रब्बी विचलित नहीं होने वाला था, न ही उसकी योजनाएँ बदलीं। किसी भी स्थिति में, मुझे आज और कल और अगले दिन (एक छोटी अनिश्चित अवधि के लिए एक सेमेटिक मुहावरा जिसके बाद एक आसन्न और निश्चित घटना होती है) पर जोर देना चाहिए क्योंकि निश्चित रूप से कोई भी भविष्यवक्ता येरुशलायिम के बाहर नहीं मर सकता (लूका १३:३३)! परमपिता परमेश्वर ने अपने पुत्र की मृत्यु का नियत समय और स्थान निर्धारित किया था। वह यह नहीं कह रहा था कि वह तीन दिनों में त्ज़ियोन पहुंचेगा। मुद्दा यह था कि येशुआ हा-मशियाच के मन में एक मिशन था और वह अपने निर्धारित कार्यक्रम पर चलते रहेंगे। लक्ष्य दाउद का पवित्र शहर था जहाँ उसकी मृत्यु होगी। वहां, उसे खुद को सार्वजनिक रूप से महान महासभा (देखें एलजी – महान महासभा) और पोंटियस पिलाटे के सामने पेश करना होगा, और फिर उसे मौत की सजा दी जाएगी।

येरुशलायिम, येरुशलायिम। यीशु का विलाप, यिर्मयाह की तरह (विलाप की पुस्तक देखें), पवित्र शहर के भाग्य पर शोक व्यक्त करता है जिसने नासरत के परमेश्वर के भविष्यवक्ता की बात मानने से इनकार कर दिया (समान विलाप के लिए भजन १३७ की तुलना

Ho – कोई भी भविष्यवक्ता यरूशलेम के बाहर नहीं मर सकता लूका
१३:३१-३५ | 3

करें)। येरुशलायिम द्वारा परमेश्वर के पुत्र की अस्वीकृति पहले ही हो चुकी थी (देखें Ek – यह केवल दुष्टआत्मा के राजकुमार बील्ज़ेबब द्वारा है, कि यह साथी दुष्टआत्मा को बाहर निकालता है)। तुम जो भविष्यद्वक्ताओं को घात करते हो, और अपने पास भेजे हुए लोगों को पत्थरवाह करते हो (पहला शमूएल ३०:६; पहला राजा १२:१८, २१:१३; दूसरा इतिहास २४:२१), कितनी ही बार मैं ने चाहा है, कि जैसे मुर्गी इकट्ठा होती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा करूं उसके बच्चों को उसके पंखों के नीचे, यानी कोमलता और प्यार से, भले ही लोग तैयार नहीं थे (लूका १३:३४)। परिणामस्वरूप, चूँकि वह राष्ट्र, जिसने उसके भेजे हुए भविष्यवक्ताओं को भी मार डाला था, और उसके शब्दों को अस्वीकार कर दिया था, वे अब उसे मार डालेंगे।

देखो, तुम्हारा घर (सिय्योन और उसके लोग) तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ दिया गया है (ग्रीक एफीताई, जिसका अर्थ है त्याग दिया गया)। विनाश की यह भविष्यवाणी जल्द ही उसके पूर्ण विनाश से पूरी हुई (देखें Mt – यरूशलेम का विनाश और ७० ईस्वी में टीशा बाव पर मंदिर)। तब जीवन और मृत्यु के सर्वोच्च सेनापति ने भजन ११८:२६ से उद्धृत किया: मैं तुम से कहता हूं, तुम मुझे तब तक फिर न देखोगे जब तक तुम न कहोगे, “धन्य है वह जो प्रभु के नाम पर आता है” (लूका १३:३५)। जब उन्होंने अपने विजयी प्रवेश में पवित्र शहर में प्रवेश किया तो भीड़ ने इस कविता को उद्धृत किया, लेकिन उनके धार्मिक नेताओं ने इसे अस्वीकार कर दिया। वह तब तक दोबारा नहीं आएगा जब तक कि एक विश्वासी अवशेष तैयार न हो जाए जो उससे वापस आने के लिए विनती करेगा (प्रकाशितबाक्य Ev पर मेरी टिप्पणी देखें – यीशु मसीह के दूसरे आगमन का आधार)। सुदूर युगान्तकारी भविष्य में इस सत्य की घोषणा तब की जाएगी जब यीशु फिर से आएंगे और सहस्राब्दी शासक के रूप में त्ज़ियॉन में प्रवेश करेंगे।